R. on 1/2 2020

- २४.०३.२०

Page 1

मनोविज्ञान के संप्रदाय
(School of psychology)

अनेक मनोवैज्ञानिकों के विचार को स्कूल कहा गया है। मनोविज्ञान का उद्गम दर्शनशास्त्र के अंतर्गत हुआ. बाद में मनोवैज्ञानिको ने दार्शनिक विचारधारा को छोड़ वैज्ञानिक आधार पर व्यवहार का अध्ययन प्रारंभ किया. उन्नीसवीं शताब्दी के अंत एवं बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में मनोविज्ञान के दर्शन दर्शनशास्त्र से अलग होने की प्रक्रिया में मनोविज्ञान के कई सम्प्रदाय अथवा प्रणाली अथवा वाद सामने आये।
अतः मनोविज्ञान के किसी संप्रदाय से तात्पर्य मनोवैज्ञानिकों के अध्ययन के लिए एक समान विचारधारा तथा विधियों का अनुसरण करना है। जो निम्नलिखित है-
संरचनावाद, कार्यवाद, व्यवहारवाद, गेस्टाल्टवाद तथा मनोविश्लेषणवाद.

1 संरचनावाद (structuralism)

संरचनावाद के प्रमुख प्रवर्तक विलियम वुण्ट नामक जर्मन मनोवैज्ञानिक थे। इन्होंने 1879 ई० में विश्व की प्रथम मनोविज्ञान प्रयोगशाला स्थापित करके मनोविज्ञान को एक स्वतंत्र विज्ञान का दर्जा दिलाया।

वुण्ट ने आरंभ में संवेदना के ऊपर प्रयोग किये। मनुष्य के ऊपर संवेदना किस तरह कार्य करती है और उससे व्यवहार में क्या परिवर्तन होता है इन बातों को वुण्ट ने प्रयोगशाला में प्रयोग कर समझने की कोशिश किया. इसके लिए उन्होनें अंतर्दर्शन विधि को अपनाया. इनके अनुसार जटिल मानसिक अनुभव वास्तव में संरचनायें हैं जो अनेक सरल मानसिक स्थितियों से मिलकर बनी है एडवर्ड, वेडफोर्ड तथा टीचनर जैसे मनोवैज्ञानिक वुण्ट के प्रमुख सहयोगी थे संरचनावादियों ने चेतन अनुभूति को मनोविज्ञान का विषय वस्तु माना.
विलियम वुंट ने चेतन अनुभूति के दो तत्व बताये हैं - (a) संवेदन (b) भाव संवेदन को उन्होनें वस्तुनिष्ठ चीज कहा है और भाव को उन्होनें आत्मनिष्ठ चीज कहा. टिचनर ने चेतन अनुभूति के तीन तत्व बताये - (a) संवेदन (b) अनुराग (c) प्रतिमा.
वुण्ट ने चेतना की दो विशेषता बताए हैं - (a) गुण (b) तीव्रता.
जबकि टिचनर ने चेतन अनुभूति के चार गुण बताये- (a) तीव्रता (b) स्पष्टता (c) अवधी